International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2016; Page No. 51-52

जय प्रकाश नवेन्दु 'महर्षि' का हिन्दी दलित साहित्य को देन

पूजा रानी

एम.फिल. (छात्रा), दक्षिण भारत हिंन्दी प्रचार सभा, चेन्नइ, तमिलनाडु, भारत।

प्रस्तावना

जय प्रकाश नवेन्दु महर्षि हिन्दी दलित साहित्य में एक ऐसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व हैं, जिनकी ख्याति हिन्दी दलित सहित्य में एक कवि, नाटककार, आत्मकथाकार, उपन्यासकार व आलोचक के रूप में है। उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर समान रूप से लेखन कार्य किया है। आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य में जयप्रकाश नवेन्दु महर्षि एक सूर्य की भांति उदित हुए हैं, जिन्होंने हिन्दी की विभिन्न विधाओं के संदर्भ में दलित साहित्य को एक नई विचारधारा और दिशा प्रदान की है। उनके द्वारा अब तक काव्य एवं कहानी संग्रह, उपन्यास, नाटक, आलोचनात्मक ग्रथं तथा विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित करवाए जा चुके हैं। उनके द्वारा रचित साहित्य ने दलित साहित्य को ओर भी अधिक विस्तृत और समृद्ध बना दिया है। जो इस प्रकार हैं :–

कविता संग्रह

कामना (1979), एकान्त वीर्ति (1981), घनी धूप के दिन (1986), कविताएँ (1991), गंगा वाले देश का दुखान्त (2001), खामाशी बुन रही है खतरा (2001), भारत अब भी उपनिवेश है (2002), छोटी सी पृथ्वी (2002), संसद तो सवर्ण है (2003), उपेक्षा के हरे हस्ताक्षर (2006), सितारों का ज्यातिर्मय ताज (2008), चांद उग चुका है (2011), दलित जाग गये हैं (2011), दलित मशाल (2012), दलित भारती (2012), दलित पताका, (2013), हर चीज से प्रेम (2015)

उपन्यास:– दोहन (1984)

आत्म कथा (पाँच भागों में)

इन्सान से ईश्वर तक (2006), मेरे मन की बाइबिल (2007), रूकी हुई रोशनी (2011), मेरा बचपन, मेरा संघर्ष (2012), कुछ कांटे कुछ फूल (2012), बंद होठों में भरा जहर (सम्पूर्ण आत्म कथा 2014)

नाटक

नयी रामायण (2009), पूर्व में अंधेरा (2009), आर्य (2009), देव चरित (2009)

कहानी संग्रह

ब्राह्मण की बेटी (2011), अपनी–अपनी जाति (2011)

अध्यात्म

प्रभूदय (विश्व धर्म ग्रंथ 2009), विश्व में शांति (2013), मैं प्रभूदूत हूं (2014), लोकधर्म (2015)

वैचारिक ग्रंथ

भारत में ब्राह्मणवाद, राष्ट्रवाद और दलित (2012), भारत में दमन (2012), भारत दलित क्रान्ति (2013), भारत में भ्रष्टाचार (2014) 'उपेक्षा के हरे हस्ताक्षर' (2006) काव्य संग्रह में 'सामना करो' नवेन्दु जी की पहली कविता है, जिसमें कवि दलित जनता को संदेश देते हुए कहते हैं कि

''सामना करो उनका जो सदियों से
तुम्हारे जीवन का शोषण कर रहे हैं,
सामना करो उनका जो सदियों से
तुम्हारे अधिकारों का हनन कर रहे हैं,
सामना करो देश के दलित बंधुओं
निज सम्मान की खातिर मिटने से मत डरो।।"[1]

'सितारों का ज्योतिर्मय ताज' काव्य संग्रह में नवेन्दु जी 'मानवता' कविता द्वारा दलित समाज को इन्सानियत और मानवता का संदेश देते हुए कहते हैं कि–

"नई चुनौतियों के लिये खुद को तैयार करो मानवता
नई स्फुर्ति, नई चेतना, नए संकल्प से भर जाओ।
संसार में तुम्हें अभी ओर भी शोषण के
अनेक शिखरों पर मुक्ति के परचम लहराने हैं मानवता।।"[2]

'दलित भारती' (2012) काव्य संग्रह में नवेन्दु जी ने अपने राष्ट्र के प्रति राष्ट्रभक्ति और प्रेम भावना का परचम लहराया है। इसी प्रकार 'दलित मशाल' (2012) काव्य संग्रह में दलितों की समाज के प्रति विचारों से सम्बन्धित कविताओं का संचय नवेन्दु जी ने किया है। इसी काव्य संग्रह कि 'दो टूक' आमुख में कवि लिखते हैं कि–

''मशाल ये है कि दलित अस्मिता की, दलित पहचान की, दलित आवाज की।
मशाल ये है दलित गौरव की, दलित गर्व की, दलित गरिमा की।।
और मशाल ये है दलित इन्कलाब की, दलित क्रांति की, दलित विप्लव की।
और मशाल ये है दलित समय की,दलित शताब्दी की, दलित युग की।
अर्थात मशाल ये है दलित चेतना के आह्वान की और मशाल ये है दलित अंत्योदय के स्वर्णिम विहान की।।"[3]

'दलित पताका' (2013) काव्य संग्रह में कवि ने दलित कवियों की कविताओं का संग्रह किया है। इस संग्रह में कवि ने कहीं दलित समाज को विकसित करने का संदेश दिया है, तो कहीं द्रविड़ संस्कृति के बारे में बताया है तो कहीं शूद्रों के शोषण का वर्णन किया है। 'ऊपर नजर उठाओ' कविता में कवि दलित समाज के लोगो को संदेश देते हुए कहते हैं कि–

''ऊपर नजर उठाओ वंचितों
ऊपर सब कुछ है,
धूप है, हवा है, चांद है,
तारे हैं, अंतरिक्ष हैं,
उन सबसे जुड़ो
ऊँचाई की ओर उड़ो।।"[4]

नवेन्दु जी के दो कहानी संग्रह 'ब्राह्मण की बेटी' (2015) और 'अपनी–अपनी जाति' (2011) प्रकाशित हुए हैं। कहानीकार नवेन्दु जी ने दोनों ही कहानी संग्रहों का 'प्राक्कथन' एक ही लिखा है, जो कि 'ब्राह्मण की बेटी' कहानी संग्रह में संकलित किया गया है।प्राक्कथन में नवेन्दु जी लिखते हैं कि– 'दोनों ही कहानी संग्रहों की कहानियाँ दलित परिवेश को प्रकट करती हैं और दलित जीवन को प्रतिबिम्बित करती है। मेरी इन तमाम कहानियों में केवल यथार्थ दर्शन ही मेरा मकसद नहीं रहा है, बल्कि उसके आगे बढ़कर उसके समाधान की भी कोशिश की गयी है।"[5]

नाटकों के विषय में नवेन्दु जी ने 'नयी रामायण' नाटक के आमुख में लिखा है कि "मेरे ये नाटक दलित विमर्श की पीठिका की तरह हैं, बुनियाद की तरह हैं क्योंकि इनका विषय वह आर्य संस्कृति है, जो सदियो से भारतीय दबे–कुचले वंचित समाज के शोषण का मूल रही है।"[6]

नवेन्दु जी का 'दोहन' (1984) उपन्यास आंचलिक शैली पर आधारित है, जिसमें उन्होंने ग्राम्य जीवन तथा वहां की दिनचर्या का वर्णन किया है। इस उपन्यास में दहेज प्रथा जैसी सामाजिक बुराई के दुष्प्रभावों का वर्णन लेखक ने किया है। उपन्यास में यही दर्शाया गया है कि किस प्रकार एक पिता (बनवारी) अपने जीवन भर की जमा–पूंजी, अपनी जमीन, घर–सम्पति आदि को अपनी बेटी की शादी करवाने के लिये गवाँ देता है तथा बाद में अपना बसा–बसाया घर छोड़कर काम की तलाश में मारा–मारा इधर–उधर भटकता फिरता है।

'दोहन' उपन्यास में बनवारी सहज स्वर में शहर की बातचीत कौशल्या को सुना रहा हैं। जो बातचीत उसने अपनी बेटी के ससुराल वालों से की थी। ''मैंने तो रूपये उन्हीं के हाथों में थमा दिये थे। समान की लिस्ट उन्होने मगंवाई थी। दुकानदार से बातचीत भी उन्ही की थी। फिर मैंने तो यही उचित समझा की वो जो सामान चाहे, जहां से खरीदना चाहे खरीद लें वे ही बरतेगें, पसंद भी उन्ही की होनी चाहिये।।"[7] "सब हो जायेगा–यह बनवारी की आवाज थी। वह हल्की खांसी के साथ गला साफ करते हुए बोला– पर जरा सी कमी फिर भी रह गयी है। कुछ सामान ओर भी खरीदना बच गया है। मैंने खाने के वक्त वहाँ भीतर सुना था। कोई जनानी की आवाज थी वह की सामान तो पूरा आना चाहिए।"[8] कौशल्या का शांत हृदय पूर्ण कराह उठा। इतने पर संतोष नहीं हुआ और क्या हमारी जान लेना चाहते हैं। जमीन तक तो गिरवी रख दी। हमें भिखारी बना कर छोडेंगें क्या?[9]

'दोहन' उपन्यास के विमोचन के अवसर पर देहरादून की राष्ट्र स्तर की कथा लेखिका श्रीमति शशी प्रभा शास्त्री जी ने दर्शकों से खचा–खच भरे सभागार में कहा था कि–"नवेन्दु जी का यह पहला उपन्यास है लेकिन इतना मच्यौर है कि आश्चर्य होता है, और वह भी अब आब्जैक्टिव शैली में।।[10] नवेन्दु जी के विषय में मैं यही कहना चाहूंगी कि नवेन्दु जी अपनी एकान्त साहित्य–साधना द्वारा अपनी स्व–रचित रचनाओं के माध्यम से हिन्दी दलित साहित्य को शीर्ष पर लाने के लिये प्रयासरत हैं। ताकि हिन्दी दलित साहित्य का परचम देश ही नहीं विदेशों में भी फहराया जा सके।

नवेन्दु जी की अब तक पाँच आत्मकथाऐं प्रकाशित हो चुकी है। अपनी आत्म कहानी में नवेन्दु जी ने अपने बचपन के कड़वे अनुभवों से लेकर अपने असफल प्रेम का तथा फिल्मी दुनिया (मुंबई) में बिताए पांच सालों का और वहाँ से आकर देहरादून में गांधी इंटर कॉलेज में अध्यापक के पद पर ज्वाइनिंग में छह महीने की देरी तथा स्कूल की मैनेजमेंट द्वारा सताए जाने का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। इन्होंनें अपनी पाँचों आत्मकथाओं का संकलन 'बंद होठों में भरा जहर' नामक शीर्षक पुस्तक में किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जय प्रकाश नवेन्दु 'महर्षि' जी का पर्दापण हिंदी दलित साहित्य में एक सच्चे दलित चिंतक के रूप में सम्पूर्ण दलित समाज के लिये बड़े ही गौरव की बात है क्योंकि नवेन्दु जी ने अपनी सच्ची लगन, मेहनत, ईमानदारी और संघर्ष के द्वारा दलित साहित्य को रचनात्मक आकार प्रदान किया है। इनका जीवन बचपन से लेकर अब तक बड़ा ही संघर्षपूर्ण रहा है। इन्होने अपने जीवन की कठिन परस्थितियों और कटु अनुभवों का वर्णन अपनी लेखनी द्वारा स्वरचित साहित्य में व्यक्त किया है।

नवेन्दु जी ने अपने साहित्य द्वारा समाज की क्रूरतम तस्वीर पेश की है और वे लिखते हैं– "यहाँ की जातिवादी शक्तियाँ अपना कुचक्र चलाने से कभी भी बाज नहीं आती हैं, चाहे वह व्यक्ति कितना भी योग्य क्यों न हो।।''[11] नवेन्दु जी लिखते हैं कि '' दलित साहित्यकार तो अपनी आत्मकथाओं से नाम और पहचान अर्जित कर गए। जबकि इन अनुभवों के सहनकर्त्ता अनेकों की संख्या में समाज में गुमनाम और अनपहचाने हैं या फिर हमेशा के लिये संसार से विदा हो गये हैं।''[12]

नवेन्दु जी के अनुसार ''एक नई विषयगत दिशा खोलने के साथ–साथ दलित चितंनधारा को ओर अधिक विस्तृत और सम्यक् बनाना भी मेरा उद्देश्य इनके पीछे रहा है।।''[13] नवेन्दु जी लिखते हैं कि "अन्त में बस मैं इतना ही कहूंगा कि मेरा यह किंचन प्रयास दलित समाज के दमन और शोषण को समझने में सहायक होगा और मेरी पुस्तकें दलित साहित्य में अपना अलग स्थान बनायेंगी।।"[14]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महर्षि नवेन्दु, उपेक्षा के हरे हस्ताक्षर (काव्य संग्रह), सामना करो (कविता), पृ0 सं0 –10
2. वही, सितारों का ज्योतिर्मय ताज (काव्य संग्रह), मानवता (कविता), पृ0 सं0 –58
3. वही, दलित मशाल (काव्य संग्रह), दो टूक (आलेख), पृ0 सं0 –7
4. वही, दलित पताका (काव्य संग्रह), नजर उठाओ (कविता), पृ0 सं0 –89
5. वही, ब्राह्मण की बेटी (कहानी संग्रह), पृ0 सं0 –9
6. वही, नयी रामायण (नाटक), पृ0 सं0 –7
7. वही, दोहन (उपन्यास), पृ0 सं0 –115
8. वही
9. वही, पृ0 सं0 –116
10. वही, पृ0 सं0 –5
11. वही, इन्सान से ईश्वर तक (आत्मकथा), पृ0 सं0 –8
12. वही, भारत में दमन (एक प्रमाणित दस्तावेज), पृ0 सं0 –8
13. वही, नई रामायण (नाटक) पृ0 सं0 –7
14. वही, भारत में दमन (एक प्रमाणिक दस्तावेज), पृ0 सं0 –8